रिकॉर्ड:- ओम नमो शिवाय ... ओम् शान्तिः प्रातःक्लास 24-12-67

रुहानी बाप ~~जि~~ जिनकी महिमा सुनी वो बैठ बच्चो को पाठ पढ़ाते है। यह पाठशाला है नां। तुम सब यहां पर पाठ पढ़ रहे हो टीचर से। यह है सुप्रीम टीचर। जिसको ही परमपिता भी कहा जाता है। परमपिता तो रुहानी बाप को ही कहा जाता है। लौकिकबापको कब भी परमपिता नही कहेंगे। अभीहम पारलौकिक बाप के पास बैठे है। कोई तो बैठे कोई तो मेहमान बन कर आते है। तुम समझते हो कि हम तो बेहद के बाप के पास बैठे है वर्सा लेने लिये। तुमको अन्दर मे कितनी खुशी होनी चाहिये। मनुष्य तो बिचार चलाते रहते है। इस समय दुनियां मे सब कहते है कि दुनियां मे शान्तिः स्थापन हो। यह तो बिचारों को पता ही नही है कि शान्तिः क्या वस्तु है। ज्ञान का सागर शान्ति का सागर बाप ही शान्तिः स्थापन करने वाला है। निराकारी दुनियां मे तो शान्तिः है ही है। चिल्लाते रहते है कि दुनियां मे शान्तिः स्थापन हो। अब नई दुनियां सतयुग मे तो शान्तिः ही थी। जबकिएक ही धर्म था। अब नई दुनियां सतयुग मे तम शान्ति थी। नई दुनियां को तो कहते ही है पैराडाईज। देवताओं की दुनियां। शास्त्रो मे तो जहां तहां पर ही अशान्तिः की ही बाते दिखाई है। दिखाते है कि सतयुग मे कंस था। द्वापुर मे फिर हरणाकश्यप को दिखाते है। त्रेता मे रावण का हंगामा। सभी जगह परअशान्तिः ही दिखा दी है। मनुष्य बिचारे कितना घोर अन्धेरे मे है। पुकारते भी है बेहद केबापको। जबकि गाड फादर और वो ही वो आकर शान्तिः स्थापन करे। गाड ~~फादर~~ फादर को तो बिचारे जानते ही नही है। शान्तिः तो होती ही है नई दुनियां मे। पुरानी दुनियांमे होनी नही है। नई दुनियां स्थापन करने वाला तो बापही है। उनको ही पुकारते है कि आकर पीस स्थापन करो। बापकहते है कि पहले तो है पवित्रता। अभी तुम पवित्रबन रहे हो। वहां पर तो पवित्रता भी है तो पीस भी है। प्लेनटी भी है। हेल्थ वेल्थ सब है। धन बिना तो मनुष्य उदास हो जाता है। तुम यहां पर आते ही हो इन ल-न जैसा धनवान बनने। यह तो विश्व के मालिक थे नां। तुम आये हो विश्व का मालिक बनने। परन्तु दिमाग सबका नम्बरवार है। बाबा ने कहा था कि जब प्रभात फेरी निकालते हो तो साथ मे ल-न का चित्रजरूर उठाओं। ऐसी युक्ति रचो। अभी बच्चो की की बुधी पारस बुधी बनने की है। पहले तो तमोप्रधान पत्थर बुधी थे। अभी तो सतो सतोप्र धान तक जाना है। वो ताकत अभी आई नही है। याद मे रहते नही है। योग बल की बहुत कमी है। फट से तो सतोप्रधान नही बन सकते है नां। यह जो गायन है कि सेकिंड मे जीवन मुक्ति। वो तो ठीक है। तुम ब्राहम्ण बने होतो माना कि जीवन मुक्त तो बन ही गये। फिर जीवनमुक्ति मे भी सर्वोत्तम, मध्यम, कनिष्ट तो होते है नां। जो सबाप का बनते हेतो जीवन मुक्ति मिलती तो जरूर ही है। भल बाप का बन कर फिर उनको छोड देते है। तो भी जीवन मुक्ति तो जरूर ही मिलेगी। स्वर्ग मे झाडू लगाने वाला बन जावेंगे। स्वर्ग मे तो जावेंगे परन्तु पद कम मिलेगा। बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते है तो उनका कब भी विनाश नही होता है। बच्चो के अन्दर मे तो खुशी की दुमदुबी बजनी चाहिये। यह हाय-2 होने केबाद फिर वाह-2 होनी है। अभी तो ईश्वरिय सन्तान हो फिर बनोगे दैवी सन्तान। इस समय का यह तुम्हारा जीवन हीरे तुल्यहै। तुम भारत की सर्विस करके भारतको पीस फुल बनातेहो। वहां पर तो पवित्रता सुख शान्ति सभी कुछ रहता है। यह जीवन तुम्हारा तो देवताओं से भी ऊंच है। अबतुम रचता बाप को और सृष्टी के चक्र को जानतेहो। कहते है कि यह त्योहार आद जो भी है वो परमपरासे चले आते है। परन्तु कबसे यह कोई नही जानते है। समझते है कि जबसे सृष्टी शुरु हुई है। रावण का जलानाभी कहते है किपरमपरा से ही चला आता है। अब सतयुग मे तो रावण होता ही नही है। मनुष्य तो बिलकुल ही पत्थर बुधी बन्दर बुधी है। यह सारे टाईटल तो बाप ने ही दिये है। काशी मे बहुत बड़े-2 टाईटल मिलते है। श्री-2 108 का टाईटल भी काशी से ही मिलता है। अब शिव बाबा कहते है कि यह तो सारे भक्ति मार्ग के ही गपोडे है। कितना शोर मचाते है कि विश्व मे शान्तिः हो। बाप को जानते ही नहीहै तो नास्तिक

~~मान= भी= है=~~ क्रिही ठहरे नां। गाते भी है कि परमात्मा सर्वव्यापी है। फिर भी परमात्मा को याद करते रहते है। समझते है कि गाड ही विश्व मे शान्तिः करेंगे तो इसी लिये कहते है कि आकर रहम करो। बच्चे ही बुलाते है बाप को। क्योंकि बच्चों ने ही सुख देखा है नां। बाप कहते है कि हम तुमको प्योअर बना कर साथ ले चलेंगें। जो प्योअर नही बनेंगें तो वो तो सजा ही खावेंगें नां। इसमें मनसा वाचा कर्मणा पवित्र रहना है। मनसा भी बहुत अच्छी होनी चाहिये। इतनी तो मेहनत करनी है कि जो पिछाडी मे तो मनसा मे भी खयल नही आवें। एक बाप के बिना कोई याद नही आवे। बाप समझते है कि अभी मनसा तब तो आवेगा ही जब तक कि इतनी कर्मातीत अवस्था बने। हनुमान की तरह अडोल बनो। उसके लिये तो बहुत मेहनत चाहिये। बाप खुद भी देखते है कि कैसे-2 तो काम करते है जैसे कि वर्थ नाट अपेनी। जो आज्ञाकारी वफादार सपूत बच्चे होते है बाप का प्यार भी उन पर ही जास्ती रहता है। पांच विकारो मे जीत ना पाने वाले इतना प्यारे नही लग सकते है। तुम बच्चे जानते हो कि हम तो कल्प-2 बाप से बेहद का वर्सा लेते है तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिये। यह भी जानते हो कि स्थापना तो जरुर होनी ही है। यह पुरानी दुनियां जरुर कब्रदाखल होनी है। हम परस्तान मे जाने लिये कल्प पहले मिसल पुरुषार्थ करते रहते है। यह तो कब्रस्तान है नां। जैसे पुरानी देहली और न्यूं देहली कहते है नां। वास्तव मे न्यू देहली तो नई दुनियां मे होगी ही नही। पुरानी दुनियां मे नई देहली क्या काम की। नई दुनियां तो परिस्तान था। सीढी कितनी अच्छी है तो भी मनुष्य समझते ही नही है। यहां ही सागर के कण्ठे पर रहनेवाले भी पुरा समझते नही है। धन होवे तो दान भी जरुर करो। धन दिये धन नां खुटे। दानी महादानी कहलाते है नां। जो हासपिटल धर्मशाला आद बनवाते है उनको महादानी कहा जाता है। उसका फल फिर अल्प काल लिये दुसरे जन्म मे मिलता है। समझो कि कोई भी धर्मशाला बनवाते है तो दुसरे जन्म मे मकान का सुख मिलेगा। समझो कि कोई भी बहुत धन दान करते है तो कोई भी राजा के घर मे वा शाहुकार के घर मे जन्म लेते है। वो दान देने से बनते है। तुम तो फिर पढाई करके राजाई पद पाते हो। पढाई भी है तो दान भी है। यहां पर तो है डायरेक्ट। भक्ति मार्ग मे है इनडायरेक्ट। शिव बाबा तुमको पढाई से ऐसा बनाते है। शिव बाबा के पास तो है ही अविनाशी ज्ञान रत्न। यह एक-2 रत्न लाखो रुपयो के है। भक्ति के लिये नही कहा जाता है। भक्ति मे तो नीचे ही गिरते जाते है। ज्ञान इसको कहा जाता है। बाकी वो तो है भक्ति का ज्ञान। शक्ति सेना की जीत इसके लिये शिक्षा मिलती है। तुमको शंकराचार्य भी कहते है कि शास्त्रार्थ करो। अब शास्त्रो मे तो भक्ति की ग्लानी की है। भूला है। उनका शास्त्रार्थ क्या बैठ के करेंगें। उनको तो भक्ति का ही कापारी नशा चढा हुआ है। तुम बच्चों को है ज्ञान का कापारी नशा। रात-दिन का फर्क है। भक्ति के बाद ज्ञान मिलता है। ज्ञान से ही विश्व की बादशाही का कापारी नशा चढ़ता है। जो जास्ती सर्विस करेंगें उनको जास्ती नशा होगा। प्रदर्शनी अथवा म्यूजियम मे भी अच्छा भाषण करने वालो को ही बुलाते है नां। वहां पर भी जरुर नम्बरवार होगा। महारथी घोडे सवार प्यादे तो होते ही है नां। दिलवाला मन्दिर मे भी यादगार बना हुआ है। तुम कहेंगें कि यह है चैतन दिलवाला मन्दिर वो है जड। वास्तव मे यहां पर लिखना चाहिये सच्चा दिलवाला मन्दिर। तो वो झूठा खुद ही सिध हो जायेगा। परन्तु तुम लिखेंगें तो झगडा कर देंगें। यह है ही झूठी दुनियां। जैसे अंग्रेजी भाषा मे बरखिलाफ है। वैसे ही सच्च के भी बरखिलाफ है। विनाश काले विप्रीत बुधी तो है ही नां। तुम तो हो गुप्त। इसलिये ही तुमको तो जानते ही नही है। तुमसे लडते है। तुम हो राजऋषी। वो है हठयोग रिषी। अभी ज्ञान ज्ञानेश्वरी हो। ज्ञान सागर तुमको ज्ञान देते है। शास्त्रो मे दिखाया है कि शंकर पार्वती पर फिदा हुआ। फिर बिच्छु टिण्डन पैदा हुये। गरुड पुराण मे विषय सागर मे बिच्छु टिण्डन दिखलाते है। वो इस समय की ही बात है। आधा कल्प तो है ही रावण का राज्य। भक्ति मार्ग माना ही दुर्गति मार्ग। तुम भी कितना समझाते हो। कहते भी है कि हां हम

हां हम आवेंगे। फिर भी गुम हो जाते है। कहेंगें कि ज्ञान तो बहुत अच्छा है मनुष्यों को समझना चाहिये। खुद नही समझेंगें। नब्ज देखने की बहुत युक्तियां चाहिये। तुम तो अविनाशी सर्जन के बच्चे हो। सर्जन ही तो नब्ज देखेंगें नां। जो अपनी नब्ज को ही नही जानते है तो वो फिर दुसरो को को कैसे जानेंगें। तुम तो अविनाशी सर्जन के बच्चे हो नां। ज्ञान अंजन सतगुरु दिया .... यह ज्ञान इन्जेक्शन है नां। आत्मा को ज्ञान का इन्जेक्शन लगता है। यह महिमा भी अभी की ही है। सतगुरु की ही महिमा है। गुरुओ को भी ज्ञान इ इन्जेक्शन तो सतगुरु ही देगें नां। तुम भी अविनाशी सर्जन के बच्चे हो तो तुम्हारा भी काम है इन्जेक्शन लगाना। डाक्टर्स मे भी कोई तो मास मे लाखां भी कमाते है। कोई तो मुशकल से 500ही कमावेंगे तो हजाम ही तो ठहरे नां। हाईकोर्ट मे जजमैन्ट मिलती है कि फांसी पर चढ़ना है। फिर प्रैजीडण्ट पास जाते है। वो माफ कर देते है। फिर जज लोग इसको भी ठीक नही समझते है।जेल मे डाल ही देते है। तो हजाम ठहरे नां। यह तो दुनियां ही है वर्थ नाट अपेनियों की। तो बच्चो को कितना नशा रहना चाहिये। उदारचित होना चाहिये। इस भागीरथ मे बाबा ने प्रवेश किया तो उनको उदार चित बनाया गया नां। खुद तो कुछ भी कर सकते है नां। वो इसमे आकर मालिक बन कर बैठे है। चलो यह सब भारत मातांओंके कल्याण के अर्थ लगाना है।तुम भी धन लगाते हो तो भारत के ही कल्याण लिए नां। कोई पूछते है कि खर्चा कहां से लाते हो?बोलो कि हम तो अपने ही तन मन धन सेसर्विस करते है। हम राज्य करेंगें तोपैसे भी तो हमी ही लगावेंगें नां। हम अपना ही खर्चा चलाते है। हम ब्राहम्ण श्रीमत पर राज्य स्थापन करते रहते है। जो ब्राहम्ण बनेंगें वो ही खर्चा करेंगें। क्षुद्र से ब्राम्ण तो बने फिर देवता भी बनना ही है। विराट रुप का चित्र बाबा के पास है ही नही। बाबा से तो कोई भी मांगते है तो झट दे देते है। तो सेन्सीबुल बच्चों का तो काम है झट बाबा पास चित्र भेज देना। परन्तु इतनी विशाल बुधी कहां से लावे?बाबा तो कहते रहते है कि सभी चित्र ऐसे ही ट्रंसलाईट के बनाओं तो जो कि मनुष्यो को खेंच होता है। कोई को झट तीर लग जावेगा। कोईतो फिर जादु के डर से आवेंगे ही नही। मनुष्य से देवता बनना यह तो जादु ही है नां। बाप पढाईसे बनाते है। ~~भगवान~~ भगवानुवाच्य है कि मै तुमको राजयोग सिखाता हूं। हठयोगी तो राजयोग सिखा ही नही सकते है। वो तो है हठयोगी हदके सन्यासी। तुम तो राजयोगी बेहद के सन्यासी हो। यह बाते भी अभी तुम्ही समझतेहो।तुम मन्दिर मे जाने लायक बन रहे हो। तुम फील करते हो कि हम तो बन्दर ही थे। हमारी ही सेना लेकर फिर बाप ज्ञान देकर विश्व पर जीत पहनाते है। यह सारा विश्व ही बेहद की लंका है। इस समय रावण का राज्य तो सारे विश्व मे ही है। बाकी सत, त्रेता मे तो यह रावण आद हो ही कैसे सकते है। यह सब तो भक्ति मार्ग के शास्त्रो का भूता है। जिससे ही मनुष्य भूसा बुधी बन जाते है। बाप कहते है कि यह भक्ति का भूता सभी निकालो। अभी तो मैतो जो कहूं वो ही सुनो। इन आखो से भी और कुछ देखो नही।यह पुरानी दुनियां ही विनाश होनी है। इसलिये ही हम अपने शान्तिः धाम सुखधाम को ही याद करते है। अब तुम समझते हो कि हम पुजारी से पुज्य बन रहे है। यही लक्ष्मी नारायण पुजारी था। नारायण की तो बहुत ही पुजा करते थे। अब फिर यही पुज्य नारायण बन रहे है। तुम भी पुरुषार्थ करके बन सकते हो। राजधानी तो चलती ही है नां। जैसे किंग एडवर्ड दी फर्स्ट सेकिंड .... चलते तो है नां। उनकाऔर तुम्हारा कनेक्शन है।जितना धन ले गये हैवो फिर सब वापस कर रहे है। इतनीतुमको मदद करते है तो उनका उपकार करना चाहिये नां। यह तो और ही उनका अपकार करते है। भाषा भी तो उनकी का तिरस्कार करते है नां। बाप कहते है कि हमारा अपकार करते आये हो ठिक्कर भित्तर मे कहते आये हो फिर भी हम तो तुम्हारा उपकार ही करते है। कितनी मुझको गालियां देते हो। यह खेल ही ऐसा वण्डरफुल बना हुआ है।पुरुषार्थ जरुर करना ही है। कल्प पहले जैसे

पहले भी जो पुरुषार्थ किया है वो ड्रामा जरूर करायेगा। जितना जो करेंगे उतना ही पद पायेंगे। पहले पहले तो समझना चाहिये कि भगवान हम को पढ़ाते है। कल तो हम रचता और रचना की आद मध्य अन्त को नही जानते थे। आज जानते है। तो हम तो शंकराचार्य आद से ऊंच ठहरे नां। वो नां तो रचता को नां ही रचना को जानते है। फिर श्री-2 कौन ठहरे?शंकराचार्य या तुम? परन्तु तुम तो हो ही गुप्त। तुम तो हो ही अननोनवारियर्स। अननोन कोई भी और होता नही है। गवर्मेन्ट के पास तो सभी के नाम आद रहते है। परन्तु यह तो तुम्हारा ही गायन है तो वो भी तुम्हारी ही कापी कर लेते है। वह कोई भी जानते थोडेई कि तुम विश्व का मालिक बनने वाले हो। इसलिये ही बाबा कहते रहते है कि ल-न का चित्र पक्षमा मे तो जरूर ही निकालो। हम यह राज्य स्थापन कर रहे है। उसमे ही पवित्रता शान्ति सब ही कुछ है। अपवित्र वो तो विश्व की बादशाही मिल ही नही सकती है। बाकी प्रजा पद मिलेगा। बाबा ने समझाया है कि काम की तो है नम्बरवन हिंसा। क्रोध भी हिंसा है। किसको भी गाली देनी या दुखी करना यह भी तो हल्की हिंसा ही है नां। मारना तो वडी हिंसा है। कब क्रोध आद भी नही करना चाहिये। कहेंगे कि इनमे
****

तो भूत है। क्रोध का भूत। देहअभिमान का भूत। ते ही बाप बार-2 कहते है कि आत्मअभिमानी बनो।

22-12-1967:-रात्री का क्लासः-:—सर्विस से बहुतो का कल्याण करना है। कोई-2 को तो सर्विस का बहुत शौक रहता है तो गर्मी सर्दी आद को भी नही देखते है। बाप को तो वण्डर भी लगता है कि कल्प पहले मुआफिक बच्चो को कितना सहज ज्ञान मिल रहा है। यह जो विराट स्वरूप का चित्र है कि हम ब्राहम्ण है फिर देवता बनते है। यह भी सिध करके बताना होता है। ब्राहम्ण केपीछे है देवताये। सिध करके बताना है। कि ब्राहम्ण तो पुरुषोत्तम संगम युग पर ही होते है। क्षुद्र से ब्राहम्ण बना माना ही ब्राहम्ण कुल का बने। ईश्वर केबच्चे ब्राहम्ण ब्राहमिणयां। ईश्वर के बच्चो को देवता नही कहेंगे। तुम बच्चे भी हो तो पोत्रे भी हो। ब्राहम्ण कुल ही सर्वोत्तम कुल है। यह भी समझाना पड़ता है कि हम ब्राहम्ण ईश्वर कुल के है। प्रजापिता ब्रहमा का बाप शिव बाबा ठहरा। जो ही ब्रहमा बनते है वो ही विष्णु बानते है। शंकर का तो पार्ट ही नही है। देवताये तो हिंसक नही होतेहै नां। बहुत सारी पुआईन्टस है। नोट नही करने से भूल जाती है। बाप को सर्विस का फुरना रहता है कि पतितो को पावन बनाऊं। इनको तो फिर अपनी राजधानी का नशा है कि अभी हम सावेरे से गोरा बनूंगा। विनाश सामने खडा है नां। खुशी तो तुम बच्चो को भी रहनी चाहिये। कहते भी हो कि हम तो आये ही है नर से नारायण बनने। फेल होते है तो जाकर प्रजा बनते है। यह तो रूहानी गाड फादर की यूनिवरसिटी है। तुमको रूह ही पढाती है। दुसरा तो कोई पढ़ा ही नही सकता है। बादशाही मिलती है तो कम बात है क्या। परन्तु पावन तो बनते ही नहीहै। तकदीर मे ही नही है तो तदवीर भी क्या कर सकती है। बाप खुद ही कहते है कि काम चिक्षा पर नही चढो जल मरोगें। बचाने वाला आया ही हैतो उनकी तो मत पर चलो। नही तो पूरी ही आग लग जायेगी। तकदीर मे ही नही है तो उनकी बुधी मे ज्ञान बैठता ही नही है। फेल होते है तो फिर चन्द्रवंशी मे आ जाते है। राम के राज्य मे भी आते है नां। कम पास तो राम के राज्य मे भी पिछाडी मे जाकर राजा बने तो उनका क्या फायदा हुआ। सच्च-2 सुख तो नही देख सकते है नां। योग का जबर भरता नही है। बाप कहते है अपने को आत्मा समझो बहुत प्यार से चलो। परन्तु ज्ञान नहा होने कारण प्यार नही रहता है। बाप आते है स्वर्ग की बादशाही स्थापन करने। बादशाही थी नां। भारतवासी लाखो वर्ष कह देते है। तो सब कुछ भूल गये है। कभी-2 समाचार आते है बच्चे गिर जाते है तो ख्याल पडता है। ओरे- काम चिक्षा पर बैठ कर जल मरे हो। फिर सोणा दण्ड लग जाता है। वो ऊंच पद नही पाते है। क्योंकि बाप की निन्दा करवाते है। समझते है कि बाबा देखता थोडेई है। वो तो बाप भी कहते है कि मुझ क्या पडी है देखने की। जो जैसा करेगा वैसा ही पावेगा। अच्छा बच्चो को नमस्ते गुडनाईट—